विदेश मंत्रालय में मेरे सुयोग्य सहयोगी श्री एम.जे. अकबर, भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद् के अध्यक्ष श्री विनय सहस्रबुद्धे, परिषद् के महानिदेशक श्रीमती रीवा गांगुली दास, अनेक देशों के राजदूत और इस सभागार में उपस्थित मेरे सभी स्नेही भाईयों और बहनों।

सबसे पहले तो मैं विनय जी और उनकी टीम को बधाई देना चाहूँगी कि आज विश्व संस्कृति दिवस के अवसर पर पं. दीन दयाल जी की स्मृति में उन्होंने इस व्याख्यान माला का शुभारंभ किया है क्योंकि विश्व संस्कृति दिवस के अवसर पर जो विषय उन्होंने रखा वह भी प्रासंगिक है और दीन दयाल जी की स्मृति में रखा यह भी प्रासंगिक है। उसके बाद मैं आभार व्यक्त करना चाहूँगी कि आप लोगों ने इस व्याख्यान माला के पहले व्याख्यान के लिए मुझे आमंत्रित किया है। मित्रों इस व्याख्यान माला का विषय है सॉफ्टपावर–कुटनीति का मधुर पहलू–भारत का सार्म्थ्य। सबसे पहले मैं आपको यह जानकारी देना चाहूंगी की यह जो शब्द है सॉफ्टपावर यह अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के क्षेत्र में बहुत पुराना नहीं है। 28 वर्ष पहले सन 1990 में हार्वर्ड के *प्रो.जोसफ नी* ने इस शब्द को खोजा था। और क्यों खोजा था क्योंकि 90 के दशक में यह चर्चा चल रही थी कि बहुत सारे तत्व ऐसे बाहर आ गए हैं जो कूटनीति को प्रभावित करते हैं लेकिन वह हार्डकोर डिप्लोमेसी का अंग नहीं है इसलिए उनके लिए एक शब्द खोजा जाए। तो *जोसफ नी* ने कहा कि यह शब्द हो सकता है – सॉफ्टपावर। सबको लगा कि यह सही शब्द है और पूरे विश्व ने इसे अपना लिया। लेकिन उसके बाद इस शब्द की व्याख्याएं होने लगीं कि इस शब्द का अर्थ क्या है। अलग–अलग व्याख्याएं होती रहीं। जिस समय यह विषय मुझे दिया गया बोलने के लिए, तो सबसे पहले मैंने सोचा कि इस शब्द की व्याख्या

तो कर लूँ। अगर मैं सच कहूँ तो मुझे इन दोनों शब्दों में बहुत अंतरर्विरोध दिखाई दिया सॉफ्ट और पॉवर। अगर हम सॉफ्ट का हिन्दी अनुवाद करें तो आम देहाती भाषा में अनुवाद होगा, नरम और मुलायम और साहित्यिक हिन्दी में करें तो अनुवाद होगा, कोमल और सौम्य। यह दो शब्द सॉफ्ट के अनुवाद में एक देहाती प्रचलन में और एक साहित्यिक हिन्दी में आते हैं। पर अगर पॉवर का अनुवाद करें तो शब्द निकलता है शक्ति और ताकत। आम भाषा में ताकत और साहित्यिक भाषा में शक्ति। मुझे दोनों में कोई तालमेल नहीं लगा। ताकत कभी नरम नहीं होती और शक्ति कभी कोमल नहीं होती। फिर मैंने अपने मन में एक चित्र बनाया कि पॉवर कहते ही क्या दिमाग में आता है तो दिमाग में आता है सिंह–शेर और कोमल या मुलायम कहते ही क्या दिमाग में आता है, खरगोश। उससे मुलायम तो कोई पशु नहीं है। फिर मैंने पक्षी की तरफ निगाह मारी तो पॉवर कहते ही मुझे दिखाई दिया बाज, और कोमल कहते ही मुझे दिखा तोता। उसके शरीर पर हाथ फेरें तो कोमल–कोमल लगता है। तो मुझे लगा कि न तो खरगोश और सिंह में कोई तालमेल है और न तोते और बाज में कोई तालमेल। मैंने सोचा कि *जोसफ नी* ने यह शब्द क्यों गढ़ा। तो मुझे लगा कि हम लोग जब डिप्लोमेसी की बात करते हैं तो हम लोग कहते हैं this is hardcode diplomacy और अब तो आम भाषा में भी यह कहा जाने लगा है। जब चार जन बैठकर बात कर रहे हों और सवाल पूछा जा रहा हो कि तुम सहमत हो या नहीं। यदि एक सहमत हो, दूसरा असहमत हो और तीसरा कोई गोल–गोल बात करे, पता ही न चले कि सहमत है या असहमत तो बाकी कहते हैं कि भई यह तो हार्डकोर डिप्लोमेट है। लगता है *जोसफ नी* ने हार्ड शब्द का विपरीतार्थक ढूंढ लिया और हार्ड का विपरीतार्थक सॉफ्ट होता है। इसलिए सॉफ्टपावर शब्द बन गया और सॉफ्टपावर शब्द विश्व ने जस का

तस अपना लिया तो हमने भी अपना लिया। लेकिन सॉफ्टपावर वास्तव में है क्या। तो मैंने सॉफ्टपावर और डिप्लोमेसी में अंतर क्या है यह देखा। मित्रों, हार्डकोर डिप्लोमेसी दो देशों की सरकारों के बीच होती है जी2जी, गर्वमेंट टू गर्वमेंट। इसलिए उसको संचालित कौन करते हैं, सरकार के मंत्री, अफसर और सरकार के डिप्लोमेट्स। लेकिन सॉफ्टपावर में सरकार की कोई भूमिका नहीं होती। it's an absolutely P2P affairs people to people affairs। जैसे अगर मैं आपको उदाहरण दूँ ब्रिटेन में बैठा हुआ कोई ब्रिटिश यह चाहे कि कोई इंडियन फूड खाना है, भारतीय खाना खाना है तो उसे अपनी सरकार से पूछने की जरुरत नहीं है। वह उठेगा, इंडियन रेस्त्रां में जाएगा, अपना मनपसंद का खाना खाएगा, और तृप्त होकर आ जाएगा। इसी तरह रुस में बैठकर कोई रुसी, भारत का गीत या संगीत सुनना चाहे तो उसे सरकार के पास एप्लीकेशन देने की जरुरत नहीं है। वह अपना मनपसंद संगीत डाउनलोड करेगा और आनंदित होगा। इसीलिए मुझे लगा कि लोक संपर्क से उपजा हुआ, मन को आनंदित करने और आत्मा को प्रफुल्लित करने वाला यह पहलू कूटनीति का सबसे मधुर पहलू है और इसलिए जब विनय जी ने मुझे कहा कि मैं हिन्दी में कार्ड पर क्या लिखवाऊ? तो मैंने कहा आप लिखवाइए सॉफ्टपावर–कूटनीति का मधुर पहलू–भारत का सामर्थ्य। इसलिए इसको कूटनीति का मधुर पहलू कहा गया क्योंकि इसमें सरकार नदारद होती है। यह पहलू लोगों के संपर्क पर चलता है और कई बार तो सरकार की पाबंदी के बावजूद लोग उस पाबंदी को नहीं मानते और इस लोक संपर्क को बनाए रखते हैं, और यह भी कहना चाहूँगी कि बहुत बार बिगड़े हुए रिश्ते इस लोक संपर्क और सॉफ्टपावर के माध्यम से वापिस पटरी पर आ जाते हैं। यह ताकत है सॉफ्टपावर की। अब हम देखेंगे कि सॉफ्टपावर में भारत का सामर्थ्य क्या है? जब मैं भारत के सामर्थ्य

की तरफ निगाह मारने लगी तो सबसे पहले मुझे दिखाई दी भारतीय संस्कृति, 'इंडियन कल्चर' मुझे बहुत खुशी है कि दीनदयाल जी ने भारतीय संस्कृति पर बहुत लिखा है और इस विषय पर उनके कुछ बहुत सुंदर कोट्स हैं। एक क्वोट उनका मैं लाई हूँ, मैं आपके सामने पढ़ूंगी। "यदि राष्ट्र की संस्कृति अनाहत है, अनाहत का मतलब है बरकरार, यदि राष्ट्र की संस्कृति बरकरार है तो सब वस्तुएं प्राप्त हो सकती हैं। संस्कृति है तो धन भी प्राप्त हो सकता है, संस्कृति है तो राजनीतिक शक्ति भी प्राप्त हो सकती है और राष्ट्र की संस्कृति है तो संसार में सम्मान भी प्राप्त हो सकता है, राष्ट्र को जीवन देने वाली वस्तुएं केवल संस्कृति देती है। " पहले दो वाक्यों में उन्होंने संस्कृति का महत्व समझाया कि संस्कृति में वो ताकत है जिससे धन भी प्राप्त हो सकता है, राजनीतिक शक्ति भी प्राप्त हो सकती है लेकिन जब उन्होंने कहा कि इससे विश्व में सम्मान भी प्राप्त हो सकता है तो उन्होंने इसे सॉफ्टपावर के रूप में स्वीकार किया। एक दूसरा क्वोट उनका है जिसमें उन्होंने विदेश के लोगों को कहा है कि "भारत की आत्मा को यदि समझना है तो उसे राजनीतिक अथवा अर्थनीति के चश्मे से नहीं देखा जाए बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही उसे देखना होगा पर इसके आगे भी उन्होंने इसको सॉफ्टपावर मानते हुए कहा कि विश्व को यदि हम कुछ सिखा सकते हैं तो अपनी सांस्कृतिक सहिष्णुता की शिक्षा से ही सिखा सकते हैं।" यह दो क्वोट मैंने उनके लेखों में से चुने हैं। एक में संस्कृति का महत्व उन्होंने समझाया और दूसरे में संस्कृति कैसे सॉफ्टपावर बन सकती है यह बताया। अगर हम विश्व को कुछ सिखा सकते हैं तो केवल अपने सांस्कृतिक दृ ष्टिकोण से ही सिखा सकते हैं। अपनी संस्कृति के माध्यम से ही सिखा सकते हैं। इसलिए मुझे लगा कि जब मैं सामर्थ्य की बात करूं तो सबसे पहले भारतीय संस्कृति के बारे में करूं। भारतीय संस्कृति के बहुत आयाम हैं लेकिन

मैं यहां केवल तीन आयाम छूना चाहूँगी। सबसे पहला आयाम है भारतीय संस्कृति का 'संतोष और अहिंसा।'' हमें इतना संतुष्ट बनाया है हमारी संस्कृति ने कि जो हमें मिला है प्रकृति से, हम उससे संतुष्ट हैं हमे न किसी की एक इंच जमीन चाहिए, न किसी का एक बूंद पानी। हम ना उपनिवेशवादी हैं, न विस्तारवादी। इतिहास गवाह है कि हमने कभी किसी को कोलोनाइज़ नहीं किया और जब हम ब्रिटिश कालोनी बने थे तो उससे भी बाहर निकलने का, आजादी प्राप्त करने का अस्त्र अहिंसा और सत्याग्रह को बनाया। महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर, महात्मा गांधी यह सब *अहिंसा परमो धर्मा* की विरासत हमें देकर गए और आज मुझे खुशी है आपको यह जानकारी देते हुए कि भारतीय संस्कृति के इस आयाम को संयुक्त राष्ट्र ने भी स्वीकारा। 2 अक्टूबर का दिन संयुक्त राष्ट्र में *विश्व अहिंसा दिवस* के रूप में घोषित किया गया है। हर वर्ष 2 अक्टूबर को हम यह दिवस मनाते हैं। न्यूर्याक में वहां हमारे मिशन द्वारा संयुक्त राष्ट्र में भी मनाते हैं।

हमारे संतोष के कारण ही मैं यह देखती हूं कि हमारे प्रधानमंत्री जी के साथ जब छोटे–छोटे, कम आबादी वाले देश के नेता भी आकर बात करते हैं तो कभी भयभीत नहीं होते। क्योंकि कहीं ना कहीं उनके मन में यह आशा बसती है कि भारत हमारी मदद तो करेगा लेकिन हम से कुछ छीनेगा नहीं, हमारे साधन सुरक्षित रहेंगे और यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के सॉफ्टपावर के इस आयाम को देखते हुए आज विश्व भारत को एक मददगार राष्ट्र तो मानता है लेकिन शोषक देश नहीं मानता।

हमारी इसी संस्कृति का दूसरा आयाम है ''वसुधैव कुटुंबकम्'' हम कहते हैं वर्ल्ड इज ए फैमिली। लेकिन कुछ वर्ष पहले करीब 20–25 वर्ष पहले एक नया आयाम आया अंतरराष्ट्रीय जगत में ग्लोबलाइजेशन का, वैश्वीकरण का, तो कुछ लोगों को लगने लगा कि भारत का जो वसुधैव कुटुंबकम् का सिद्धांत था उसका एक और पर्यायवाची शब्द पश्चिम ने दे दिया ग्लोबलाइजेशन, वैश्वीकरण। यह ठीक है कि दोनों के केंद्र में विश्व है क्योंकि जब ग्लोबल शब्द आता है तो वर्ल्ड आता है। जब वसुधैव कुटुंबकम् में वसुधा शब्द आता है तो समूची पृथ्वी आती है। लेकिन वह नहीं जानते कि वैश्वीकरण और वसुधैव कुटुंबकम् के सिद्धांतों में कितना बड़ा अंतर है।

ग्लोबलाइजेशन के केंद्र में बाजार है, वसुधैव कुटुंबकम के केंद्र में परिवार है। बाजार के केंद्र में व्यापार है, परिवार के केंद्र में प्यार है।

बाजार में नफा नुकसान होता है, परिवार में सम्मान होता है।

बाजार में माल बिकता है, परिवार में मोह पलता है।

बाजार में कलह होती है, परिवार में सुलह होती है।

इतना बुनियादी अंतर है ग्लोबलाइजेशन और वसुधैव कुटुंबकम् में और इसीलिए बाजार में निवेश होता है, परिवार में प्रेम होता है और इसी वसुधैव कुटुंबकम् के कारण यह प्रेम का प्रवाह, यह प्रेम की धारा, यह प्यार, भारत सब ओर उड़ेलता है। जब भी कोई बाहर से आता है, आने के बाद जब भी पहली मुलाकात हमारी होती है, तो कहते हैं आपकी हॉस्पिटैलिटी आपके आतिथ्य से

हम लोग अभिभूत हो गए। यह भारत की बहुत बड़ी सॉफ्टपावर है, बहुत बड़ी ताकत है।

इसी संस्कृति का तीसरा आयाम है *''सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय''* सबके हित के लिए, सब के सुख के लिए। अभी अभी आप देख रहे हैं कि अंतर्राष्ट्रीय जगत में एक तूफान आया है प्रोटेक्शनिजम का, सरंक्षणवाद का, इसके केंद्र में केवल ''मैं'' है, I, me and myself, मैं मेरा और मुझको। लेकिन भारत अपनी संस्कृति के माध्यम से कहता है मैं नहीं हम, we and ourselves और जब we की बात हम करते हैं तो all की बात, सबकी बात करते हैं। क्यों करते हैं ? मैं शब्द जब हमने प्रयोग किया तो क्या कहा ''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' का अर्थ है " जैसा मैं हूं सभी प्राणियों को मैं उस जैसा ही देखूं। आत्मवत् मतलब मेरे जैसा, मैं जैसा हूं सर्वभूतेषु मैं सभी प्राणियों को वैसा ही देखूं। " अगर मैं सभी प्राणियों को अपने जैसा देखता हूं तो प्रोटेक्शनिजम की कोई जगह ही नहीं रह जाती, संरक्षणवाद की कोई जगह ही नहीं रह जाती। क्योंकि मैं और दूसरा प्राणी अगर एक है तो मैं किस को प्रोटेक्ट करूंगा, अगर खुद को प्रोटेक्ट करूंगा तो उसको भी प्रोटेक्ट करूंगा। अगर अपने लिए सुरक्षा मुहैया कराऊंगा, तो उसके लिए भी कराऊंगा। अपने लिए खाना तय करुंगा तो उसके लिए भी करूंगा। इसीलिए यह जो संरक्षणवाद है उसका कोई स्थान हमारी संस्कृति में नही है। पिछली बार जब मैं संयुक्त राष्ट्र की आम सभा में बोलने गई थी तो एक दिन पहले राष्ट्रपति ट्रंप ने आकर यह कहा कि मेरा नारा है, me first। उसके बाद मेरी C-Lac देशों के साथ एक मीटिंग थी, C-Lac का मतलब साऊथ

अमेरिका के सारे देश। जब मैंने उस मीटिंग में चर्चा शुरु की तो एक बहुत छोटे देश के विदेश मंत्री ने मुझे कहा कि मुझे पहले यह बताइए कि जो आज राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा me first अगर सब लोग me first कहने लगे तो मैं कहां जाऊंगा, मेरे देश में तो ताकत नहीं है, ना आज अपने लोगों को खिलाने की, ना आज अपने लोगों को सुविधाएं उपलब्ध कराने की, अगर आप सब me first कहने लगेंगे तो मेरा क्या होगा, मेरे लोगों का क्या होगा। तो मैंने वहां यह कहा कि भारतीय संस्कृति me first वाली नहीं है। मैंने कहा आप मेरा भाषण कल सुनेंगे उसमें होगा ''सर्वे भवंतु सुखिनः'' और सब तभी सुखी होंगे जब सबके लिए खाने का प्रबंध होगा, सबके लिए सुरक्षा का प्रबंध होगा। इस संदर्भ में मुझे बहुत सुंदर क्वोट मिला दीन दयाल जी का। उन्होंने कहा ''जो कमाएगा वो खिलाएगा और जो खायेगा वो कमाएगा।'' प्रोटेक्टनीज़म का इससे बेहतर और उपयुक्त जवाब नहीं हो सकता। क्योंकि हमारी कौटूम्बिक परंपरा इसी पर चल रही है, कुटुम्ब में जो सबसे बड़ा बेटा होता है, वो जब पढ़ लिख जाता है और कमाने लगता है तो सबको खिलाता भी है और छोटे भाई बहनों को पढ़ाता भी है। तो यह हुआ ''जो कमाएगा वो खिलाएगा।'' हमारे यहां जो सबसे पहले कमाना शुरु करता है वो सबको खिलाता है, लेकिन जब खा पीकर छोटा भी पढ़ लिख जाता है, वो भी कमाना शुरू करता है। और फिर दोनों कमाते हैं और परिवार को खिलाते तथा औरों को पढ़ाते हैं। जब वो पढ़ जाएंगे तो वो कमाएंगे। यही है देशों की स्थिति ''जो कमाएगा वो खिलाएगा।'' आज जो सम्पन्न देश हैं, जो धनवान देश हैं, आज जिसके पास समृद्धि है, आज जिसके पास पैसा है, वो उन सबको खिलाएगा जिनके पास खाने को नहीं है। जिनके पास सुख–सुविधाएं नहीं हैं, जिनके बच्चे भूखे हैं, वो उनको देगा, लेकिन जब उन बच्चों को खाना मिलेगा, उन बच्चों को शिक्षा मिलेगी और वो

अपने पांव पर खड़े हो जाएंगे तो वो कमाएंगे और जब वो पूरा देश कमाएगा, तो वो उनकी आश्रिता से बाहर निकल जाएंगे। यह है भारतीय संस्कृति का आयाम कि जो ''कमाएगा वो खिलाएगा, जो खाएगा वो कमाएगा'' और इसी के आधार पर हमारी डेवलपमेंट पार्टनरशिप, विकास की सहभागिता चल रही है। हम अपने पड़ोसी देश अफगानिस्तान में गेहूं भेजते हैं। हम लोग पिछले छह महीने में सात बार गेहूं चाबहार पोर्ट के माध्यम से भेज चुके हैं। अफ्रीकी देशों में भेजते है। लीस्ट डेवलपमेंट कंट्रीस यानि सबसे कम विकसित देशो में भेजते हैं क्योंकि अगर हम यह नहीं करेंगे तो विकसित देश और विकसित होते चले जाएंगे और अविकसित देश अविकसित ही रह जाएंगे। तो दुनिया में गैर बराबरी कैसे घटेगी? हम जब यह बात करते हैं कि हम inequality को खत्म कर देंगे। तो inequality कैसे खत्म होगी अगर धनवान अपना धन अपने तक रखेगा और गरीब अपने आप को स्वयं देखेगा तो उसके पास तो साधन ही नहीं है। यहां एक और भारतीय संस्कृति का आयाम मैं आपको बताऊं। हमारे यहां दान के साथ अहंकार की मनाही है। हम इसीलिए इसको दान शब्द कहते ही नहीं सहायता कहते हैं, मदद कहते हैं। अगर आप अपना पैसा हेकड़ी से दूसरे को देते हैं तो वो सही नहीं है। हमारे यहां अहंकार के साथ दान देने को अच्छा नहीं माना जाता। इस संबंध में एक कहानी भी है। एक राजा बहुत दानवीर थे, उनके एक कवि मित्र ने सुना कि वो राजा दिन–रात दान देते हैं। उनके मन में एक भावना पैदा हुई कि मैं जाकर अपने मित्र से एक बार मिलूं और देखूं कि वह कैसे दान देते हैं। वह राजा के यहां मिलने के लिए गए तो उन्होंने देखा सुबह–सुबह सात बजे राजा बैठ गए। याचियों की कतार लगी थी वह दान दे रहे थे। दान देते समय उनका हाथ तो ऊपर उठता था लेकिन आंख नीचे हो जाती थी। तो उन्होंने उनसे सवाल किया कि राजाजी ज्यों–ज्यों कर ऊपर उठे

त्यों–त्यों नीचे नैन, क्यों यह होता है। मैं पिछले सात दिन से देख रहा हूँ कि आप जब दान देते हैं तो आपका हाथ जैसे–जैसे ऊपर उठता है, आपके नैन नीचे होते जाते हैं, ऐसा क्यों होता है? तो राजा ने कविता में जवाब दिया, ''देनहार कोई और है देवत है दिन रैन, लोग भरम हम पर करें तासों नीचे नैन''। देने वाला कोई और है वो उसी ने हमें दिया है, दिन रात देता है, मुझे उसी ने समृद्ध बनाया है लेकिन लोग यह भ्रम कर रहे हैं कि मैं दे रहा हूँ। मुझमें यह अहंकार न आ जाए कि मैं दे रहा हूँ, इसीलिए जब मैं देता हूं तो मेरा हाथ ऊपर होता है और आंखें नीचे होती हैं। भारतीय संस्कृति के कारण हम कभी देने की अकड़ नहीं रखते। हेकड़ी से नहीं देते। हम उसे दान नहीं कहते, हम उसे donation नहीं कहते हम उसे सहायता कहते हैं, help कहते हैं, assistance कहते हैं। यह हमारी बहुत बड़ी सॉफ्टपावर है जो हमारी कूटनीति को प्रभावित कर रही है। यह भारतीय संस्कृति का पहला पहलू मैंने आपके सामने रखा अपनी सॉफ्टपावर का।

दूसरा पहलू है कुछ दिन पहले ही उभर कर आया है। लेकिन है बहुत पुराना, बहुत ज्यादा पुराना और वो है योग। पतंजलि का दिया हुआ योग हमारी बहुत बड़ी धरोहर है। आज मैं धन्यवाद देना चाहूंगी इस मंच से प्रधानमंत्री मोदी जी को क्योंकि यह छिपी हुई धरोहर थी। लोग अपने–अपने स्तर पर जहां–जहां योग करना चाहते थे करते थे, लेकिन मई 2014 में मोदी जी प्रधानमंत्री बने और सिंतबर 2014 में मात्र कुछ महीने बाद उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को संबोधित किया और जाकर उन्होंने एक इच्छा प्रकट की कि मैं चाहता हूं कि 21 जून का दिन जो पृथ्वी का सबसे बडा दिन होता है उसको अंतर्राष्ट्रीय

योग दिवस के रूप में घोषित किया जाना चाहिए। उसके बाद विदेश मंत्रालय के ऊपर यह जिम्मेदारी आई कि उनकी इस इच्छा को परवान चढाए। भारत की तरफ से हमने अपने मिशन को कहा कि एक प्रस्ताव बनाकर संयुक्त राष्ट्र को दे दो कि 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया जाना चाहिए। मुझे आज आपको बताते हुए बहुत खुशी है कि जैसे ही यह प्रस्ताव हमने दिया, संयुक्त राष्ट्र के कुल 193 देश हैं उनमें से 177 देश हमारे साथ सहप्रस्तावक बन गए और मात्र 75 दिन में वो प्रस्ताव निर्विरोध पारित हो गया। यानी 177 देश तो सहप्रस्तावक बने लेकिन विरोध एक देश ने भी नहीं किया। वो प्रस्ताव निर्विरोध पास हो गया और आज उसका प्रभाव हम देख रहे हैं पूरी दुनिया में योग फैल रहा है। ऐसे देश जो योग सार्वजनिक स्थल पर करने की इजाज़त नहीं देते थे उन्होंने भी रास्ते निकाले। सऊदी अरब ने उसे खेल की श्रेणी में रख दिया ताकि सार्वजनिक स्थानों पर योग किया जा सके। अभी हमने पद्मश्री जिनको दिए हैं उसमें सऊदी अरब की एक युवती हैं मोफा, उनको भी हमने पद्मश्री दिया है। वो भारत से योग सीखकर गई थीं और अपने यहां सऊदी अरब में योग करवा रही थीं। लेकिन छिपकर करवाना पड़ता था क्योंकि सार्वजनिक रूप से नहीं करवा सकती थीं। वह मुझे सऊदी अरब में मिलीं और वो इतनी प्रसन्न हुईं उन्होंने बताया कि "मैं इतना संघर्ष कर रही थी की लेकिन आपके प्रधानमंत्री जब यहां आए, पता नहीं क्या जादू कर गए कि हमारे यहां भी योग को खेल की श्रेणी में रख दिया गया है और अब हम लोग सार्वजनिक तौर पर योग करवा सकते हैं।" मेरे कहने का अर्थ यह है कि इतनी बड़ी ताकत जो छिपी हुई थी अब उभर कर आ गई। जब पहला योग दिवस संयुक्त राष्ट्र में मनाया गया था तो मैं स्वयं न्यूयार्क गई थी, हमने यू एन हेडक्वाटर में मनाया था, श्री श्री रवि शंकर गए थे योग कराने के लिए।

मैं हैरान हो गई थी कि उस समय के सेक्रेटरी जनरल बान–की–मून और उनकी पत्नी योगा मेट्स पर थे उस समय की संयुक्त राष्ट्र की आम सभा के अध्यक्ष **सेम कुटेस** योगा मेट पर थे और यहां यह हमारे राजदूत बैठे हैं पिछली बार हम लोगों ने यहीं इसी सभागार में कार्यक्रम किया था। आधे से ज्यादा राजदूत और उससे ज्यादा उनकी पत्नियां योगा मेट्स पर थीं। यह सभी दृष्टान्त यह बताते हैं कि यह योग जो छिपी हुई ताकत के रुप में कहीं छिपा हुआ था, परदे में छिपा हुआ था। जब से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने इसे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रुप में घोषित करवाया। योग हमारी सबसे बड़ी सॉफ्टपावर के रुप में बनकर उभरा है।

तीसरी हमारी सॉफ्टपावर है हमारा शास्त्रीय नृत्य हमारा क्लासिकल डांस। खासतौर पर जब मैं सेंट्रल एशिया के देशों में जाती हूँ तो मुझे उनमें एक अलग ललक दिखाई देती है शास्त्रीय संगीत की। आज भी अपने यहां जितने गुरु शिष्य परम्परा के शिक्षण संस्थान चल रहे है उसमें अगर आप देखें तो भारतीय कम है उज्बेकिस्तान, तजाकिस्तान, क्रिगिस्तान, रशिया इनकी बच्चियां ज्यादा हैं और लड़के भी आ रहे हैं, ज्यादा से ज्यादा लड़के कथक सीखने आ रहे हैं लेकिन भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, ओडिसी इन सब की गुरु शिष्य परंपरा में वहां की बच्चियां आ रही हैं। आप कहेंगे कि क्या ऐसी वजह है किसलिए यह आकर्षण है। यह इसलिए कि शास्त्रीय नृत्य परफोर्मिंग आर्ट की एक सम्पूर्ण कला है। अकेला एक नृत्य आप देखिये उसमें गीत की आवाज भी है, संगीत का साज भी है, उसमें घुंघरूओं की खनक भी है, उसमें पैरों की धमक भी है, उसमें सुर और लय भी है और भाव भरा अभिनय भी है। परफोर्मिंग आर्ट की जितनी भी विधाएं है गीत, संगीत, वाद्य और नाटक वह सभी विधायें

नृत्य में शामिल हैं। कोई नृत्यांगना बिना अभिनय, बिना मुद्रा के शास्त्रीय नृत्य नहीं करती। जब इतनी विधायें एक साथ देखने को मिलती हैं तो उसका आकर्षण क्यों नहीं होगा। मैं रीवा जी और विनय जी को बधाई देना चाहूँगी कि जब मैं चीन गई थी तो चीन के विदेश मंत्री के यहां आने पर आपने जो सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाया उन्होंने सबको बताया कि वो कार्यक्रम मैं आजतक नहीं भूलता और उन्होंने कहा जब भी आप भारत जाइए कम से कम इनका शास्त्रीय नृत्य जरूर देखिए। इतनी बड़ी सॉफ्टपावर है हमारी शास्त्रीय नृत्य।

उसके बाद एक और बहुत बड़ी सॉफ्टपावर है हमारी, वो है भारतीय फिल्में। पहले वो केवल बालीवुड तक सीमित थी लेकिन अब तो हमारी रिजनल फिल्म इंडस्ट्री इतनी ज्यादा बढ़ गई है कि एक तरफ दंगल और सीक्रेट सुपरस्टार ने बहुत बड़ा बिजनेस किया चीन में तो बाहुबली ने उससे कम बिजनेस नहीं किया। वह फिल्म तेलुगु में बनी थी हिन्दी में तो डब हुई थी। जब मैं चीन गई तो पता लगा कि चीन के राष्ट्रपति ने यह चाहा था कि ब्रिक्स के सम्मेलन में दंगल दिखाई जाए क्योंकि दंगल और सीक्रेट सुपरस्टार यह दोनों एक संदेशवाहक फिल्में है जहां जेन्डर एमपावरमेंट महिला सशक्तिकरण की बात की गई है। दंगल में अगर पिता प्रेरणा देता है तो सीक्रेट सुपरस्टार में बिल्कुल एक घरेलू मां बाद में प्रेरक बनती है। भारतीय फिल्में और भारतीय फिल्मों के गीत विदेशों में कितने लोकप्रिय हैं, आप यहां बैठकर उसका अंदाजा नहीं लगा सकते। मैं जब दूसरे देशों में जाती हूँ तो देखती हूं। मैं अभी मंगोलिया गई थी मंगोलिया के प्राइम मिनिस्टर से मैं मिल रही थी तो उन्होंने कहा कि I wanted to be an actor of bollywood तो मैंने उनसे चुटकी लेते हुए कहा कि we need some handsome people in politics also । अभी कुछ दिन

पहले आसियान का सम्मेलन हुआ था उसमें एक रात्रिभोज था। वहां सारे विदेश मंत्री आए हुए थे तो वहां हमने एक कार्यक्रम करवाया शास्त्रीय संगीत का केवल वाद्य यंत्र का कार्यक्रम था उसमें उन्होंने कुछ बालीवुड के गीत भी गवाये। तो मैंने विदेश मंत्री से पूछा कि अगर आप की कोई पसंद है तो मैं वो गीत गवा सकती हूँ अगर उस वाद्य वादक वाले को वो गीत आता है तो। एकदम से सिफारिश आई ''कुछ–कुछ होता है'' सुनना है। तो दूसरा बोला मैंने ''बोल राधा बोल संगम'' सुनना है। तो मैंने कहा जाओ पूछो ये कलाकार इन गीतों को बजा सकते हैं क्या, यदि बजा सकते हैं तो दोनों गीत बजायें और सौभाग्य मेरा कि वाद्य वादक को दोनों गीत आते थे तो उन्होंने पहले ''कुछ–कुछ होता है'' बजाया और फिर ''बोल राधा बोल संगम बजाया।'' इस तरह से हमारे गीत लोकप्रिय हैं। इस तरह से हमारी फिल्में लोकप्रिय हैं और अब तो लोग आगे आ कर हमसे कहते हैं कि आपके जो बालीवुड के लोग हैं उनसे आप कहिए कि वो हमारे यहां आकर शूटिंग करें क्योंकि उस शूटिंग से टूरिज्म बढ़ जाता है। जब आपके यहां की कोई भी फिल्म कहीं दूसरे देश में फिल्माई जाती है तो आपके देश के लोग उस देश में खूब जाते हैं। इसलिए हमारा पर्यटन भी बढ़ जाता है। इतनी बड़ी सॉफ्टपावर है बालीवुड। हमारे यहां फैस्टीवल आफ इंडिया होता है। फैस्टीवल आफ इंडिया इजिप्ट में हुआ। उसके कुछ दिनों बाद मेरा जाना हुआ इजिप्ट। तो हमारे एम्बेस्डर ने कहा कि मैम पिछली बार फैस्टीवल आफ इंडिया में अमिताभ बच्चन ब्रांड एम्बेस्डर बनकर आए थे और मैं आपको बताना चाहूँगा कि 8 बरस के बच्चे और 80 बरस के बूढ़े, दोनों के दोनों बराबर उत्सुक थे उनके साथ सेल्फी खिंचवाने के लिए। इतनी बड़ी सॉफ्टपावर है हमारी भारतीय फिल्में ।

इसके बाद एक नई सॉफ्टपावर उभर के आई है, वो छिपी हुई थी, वह है भारतीय व्यंजन। एक समय था जब हम लोग बाहर जाते थे तो कोई एक आधा इंडियन रैस्त्रां दिख जाये तो दिख जाए। काफी वर्षों पहले मैं चीन गई थी तो कोई इंडियन रैस्त्रां नहीं था लेकिन अब भरमार हो गई है। अब चेन्स की चेन्स निकल आई है जो भारतीय व्यंजन बनाती है और जब विदेशी अतिथि यहां आते हैं तो मैं उनसे पूछती हूँ की "Do you like Indian food, they say we love it" एक यूरोप वाले विदेश मंत्री आए तो मैंने उनके लिए खासतौर पर बिना मिर्च का खाना बनवाया था क्योंकि उनको मिर्च अच्छी नहीं लगती। तो मैंने उनसे कहा but it is very spicy तो उन्होंने कहा "yes, it is spicy but I love halwa" He said "I like sweets of India". बाकी जो लोग आते हैं वे कहते हैं कि हमको स्पाइसी (मसालेदार) फूड पसंद है। एक बार तो मैं हैरान रह गई कि दक्षिण अफ्रीका की विदेश मंत्री ने मुझे एक दिन बताया कि आपका सारा खाना एक तरफ आपका दाल और नान एक तरफ। मैं तो कहीं से भी यात्रा करके आती हूं तो अपने बच्चों को कहती हूँ कि जाकर इंडियन रैस्त्रां से दाल और नान ले आओ। गोवा के ब्रिक्स सम्मेलन में वह आई थीं तो मैंने चुपके से वैटर को बोल दिया कि उनकी थाली में और कुछ मत रखना केवल गरम गरम नान और दाल रख देना और फिर नान लाते रहना। मैं आपको बताऊं जैसे ही उन्होंने अपनी थाली में दाल और नान देखा तो वो पीछे से आकर मेरे गले से झूल गईं "Oh, Sushma you are great। सबकी थाली भरी हुई थी उनकी थाली में केवल दाल और नान था और इसी कारण आकर खुशी से पीछे से वो मेरे गले लगकर झूल गईं। यह ताकत है हमारे भारतीय व्यंजनों की। इंडियन शेफ मास्टर शेफ बन गए हैं। पुरस्कृत किए गये हैं। इतनी बड़ी ताकत है भारतीय व्यंजन की।

इसी तरह से एक और नई सॉफ्टपावर आई है, वह है आईटी। इंफोरमेशन टैक्नोलोजी। पूरे विश्व में आज भारत को आईटी की सुपरपावर कहकर संबोधित किया जाता है। लोग कहते हैं अमेरिका में जब तक कोई कंपनी स्टॉक एक्सचेंज में स्मिथ के साथ सुब्रमण्यम नहीं लगाती और मार्क के साथ मूर्ति नहीं लगाते तब तक उनके शेयरों का दाम नहीं बढ़ता। यह स्थिति है आईटी में। हमारे यहां एक कार्यक्रम चलता है मंत्रालय में I-Tec. जिसमें हम लोगों की सहायता करते हैं टैक्नोलोजिकल और इकोनोमिकल। उसमें आई टी थी नहीं 70–72 और चीजें थी। अब केवल मांग आईटी के स्लॉट की आ रही है और जब भी कोई विदेश मंत्री आता है तो कहता है हमारे स्लॉट आप 40 से 50 कर दीजिए, हमारे स्लॉट आप 30 से 70 कर दीजिए। कोई कहता है कि आप हमारे यहां आकर आई.टी का सेंटर स्थापित कर दीजिए। अभी हमने पूरे अफ्रीका के लिए एक पैन अफ्रीका कार्यक्रम चलाया है, एक शिक्षा का और एक स्वास्थ्य का। हमने नाम दिया है उसे ई–विद्या भारती और ई–आरोग्य भारती। भारत की आईटी पावर इतनी बड़ी सॉफ्टपावर बन के उभरेगी यह हमें मालूम नहीं था। लेकिन यह हमारे प्रोफेशनल्स को श्रेय जाता है कि उन्होंने रातों रात भारत को आईटी की सुपरपावर बना दिया है आज उनका नाम इतना ज्यादा बढ़ गया है कि यह एक नई सॉफ्टपावर बन के उभरी है।

मैंने 6 सॉफ्टपावर का जिक्र आपके सामने किया। भारतीय संस्कृति उसके तीन आयाम, अहिंसा परमोधर्मा, वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्व जन हिताय–सर्व जन सुखाय। भारतीय संस्कृति के बाद योग, योग के बाद शास्त्रीय नृत्य, उसके बाद भारतीय

फिल्में और व्यंजन एवं आईटी। बहुत बड़ा खजाना है सॉफ्टपावर का लेकिन समय की समस्या है मुझे 45 मिनट का समय दिया गया था, उसके बीच में ही यह विषय मुझे समाप्त करना है। इसलिए मैं आपको एक बात कहना चाहूँगी कि यह तो छोटी–छोटी चीजें है जो मैंने आपके सामने रखीं लेकिन यह हमारी संपदा बहुत बड़ी है। मैंने खजाना शब्द का इस्तेमाल किया। भारत के पास सॉफ्टपावर की तिजोरी भरी हुई है और मैं आज यह कह सकती हूँ कि भारत अपनी सॉफ्टपावर के बल पर ही इस क्षेत्र में विश्व विजयी हो सकता है। लेकिन एक बात है यह विजय हथियार से नहीं प्यार से हासिल होगी, केवल प्यार से, अनंत प्यार से–अनंत प्यार से।

धन्यवाद।